पाश
की
कविता
हम लड़ेंगे
साथी
Subscribe
प्रस्तुतकर्ता- डॉ आरिफ महात

हम लड़ेंगे साथी / पाश

हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लए
हम लड़ेंगे साथी, ग़ुलाम इच्छाओं के लए

हम चुनेंगे साथी, ज़िन्दगी के टुकड़े
हथौड़ा अब भी चलता है, उदास निहाई पर
हल अब भी चलता हैं चीख़ती धरती पर
यह काम हमारा नहीं बनता है, प्रश्न नाचता है
प्रश्न के कन्धों पर चढ़कर
हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे साथी / पाश

क़त्ल हुए जज़्बों की क़सम खाकर
बुझी हुई नज़रों की क़सम खाकर
हाथों पर पड़े घट्टों की क़सम खाकर
हम लड़ेंगे साथी

हम लड़ेंगे तब तक
जब तक वीरू बकरिहा
बकरियों का मूत पीता है
खले हुए सरसों के फूल को
जब तक बोने वाले ख़ुद नहीं सूँघते
क सूजी आँखों वाली
गाँव की अध्यो पका का पति जब तक
युद्ध से लौट नहीं आता

हम लड़ेंगे साथी / पाश

जब तक पुलस के सपाही
अपने भाइयों का गला घोंटने को मज़बूर हैं
क दफ़्तरों के बाबू
जब तक लखते हैं लहू से अक्षर

हम लड़ेंगे जब तक
दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाक़ी है
जब तक बन्दूक न हुई, तब तक तलवार होगी
जब तलवारें न हुईं, लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की ज़रूरत होगी

हम लड़ेंगे साथी / पाश

और हम लड़ेंगे साथी
हम लड़ेंगे
क लड़े बग़ैर कुछ नहीं मलता
हम लड़ेंगे
क अब तक लड़े क्यों नहीं
हम लड़ेंगे
अपनी सज़ा कबूलने के लए
लड़ते हुए जो मर गए
उनकी याद ज़िन्दा रखने के लए
हम लड़ेंगे